नवम् अध्याय chapter-9

उपसंहार

हिन्दी का स्तोत्र-साहित्य भारतीय जन-जीवन के लिए एक अत्यंत ही आवश्यक वस्तु है। हमारे पूर्वज आर्यों का मूल उद्देश्य जन-कल्याण ही था जिसके लिए वे एकान्त-चिंतन में संलग्न होकर प्रकृति की विभिन्न शक्तियों की उपासना करते थे। वाह्य रूप में उनकी उपासना द्वैतवादी कही जा सकती है परन्तु उसके मूल में उनका उद्देश्य अद्वैत सत्ता का ही अनुशीलन करना था। समस्त वैदिक एवं पौराणिक साहित्य में इस भावना का दर्शन किया जा सकता है। जैन-बौद्ध-साहित्य के अतिरिक्त हिन्दी निर्गुण-सगुण साहित्य का भी यही उद्देश्य माना जाता है। हिन्दी के चारों कालों में इसी आधार पर स्तोत्रों की रचना की गई है। भक्ति-भाव से अत्यधिक प्रभावित होने के कारण उसका `रस-निर्देशन` भी पृथक ही है और यदि देखा जाय तो उसके आधार पर मानव-जीवन की सभी समस्याओं का भी अध्ययन किया जा सकता है। " स्तोत्र " मानव परिस्थितियों के उत्कृष्ट व्याख्याकार और पथ-निर्देशक हैं।

स्तोत्र-साहित्य आदि काल से लिखा जाता रहा है केवल मानव परिस्थितियों ने उसके रचना-विधान पर अपनी छाया छोड़ने का प्रयत्न किया है। १६वीं और २०वीं शताब्दी के भक्ति आन्दोलनों का बहुत बड़ा प्रभाव "स्तोत्र-साहित्य" पर पड़ा है। परन्तु इतना होते हुए भी उसकी आन्तरिक प्रवृत्ति में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होने पाया है।

`भक्ति कालीन स्तोत्र-साहित्य` हिन्दी की एक मूल्यवान धरोहर है और उससे हमारी भारतीय-संस्कृति का सच्चा प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। तुलसी, सूर एवं जायसी आदि यदि एक ओर भक्त एवं कवि थे तो दूसरी ओर उन्होंने साहित्य के द्वारा भारतीय सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक पीठिका भी उपस्थित ~~किया~~ की है। यही कारण है कि तुलसी को

भारतीय संस्कृति का सफल प्रणेता माना जाता है ।

वैदेशिक शासन की स्थापना के कारण जब समाज भोग-विलास की रंगीनी में परिलिप्त होगया , उस समय राधा-कृष्ण भी साधारण नायक-नायिका की ही भांति साहित्य में प्रयुक्त किए जाने लगे । योगिराज कृष्ण जयदेव के श्रृंगारी कृष्ण बन गए । परिणामत: भक्ति की जो ज्योति १६वीं १७वीं शताब्दी में दीपित हुई थी उसका अंतिम प्रकाश रीतिकाल में दिखाई पड़ा और आंशिक रूप में स्तोत्र-साहित्य की रचना हुई ।

आधुनिक काल के प्रारम्भिक कवियों में वही अवशेष ज्योति टिमटिमाती हुई प्रविष्ट हुई और ब्रजभाषा-कवियों ने अपनी भक्ति-भावना का प्रदर्शन करने का प्रयत्न किया परन्तु राष्ट्रीय-आन्दोलनने भक्ति की इस ज्योति को मातृ-भूमि की ओर उन्मुख कर दिया और राम-कृष्ण के अतिरिक्त अब भारतमाता को आराधना का आधार बनाया गया । इस प्रकार इसकाल में देवी-देवताओं के स्तोत्रों के अतिरिकत, प्रकृति एवं भारतदेश के प्रति भी स्तोत्र लिखे गए । परन्तु जो भक्ति-भावना कबीर, तुलसी एवं सूर के साहित्य में विद्यमान थी उसका न्यूनतम रूप भी इसकाल में अवशिष्ट न रहा । निष्काम भावना की अपेक्षा अब कवि की उपासना का आधार समाजिक एवं आर्थिक उत्पीड़न बन गया । निर्धनता के कारण मानव जीवन में अर्थ -प्रप्ति की भावना को बल मिला और भक्ति -भावना गौण बन कर रह गई । परिणामत: प्रगतिवादी एवं प्रयोगवादी कविता के प्रार्दुभाव के साथ साथ स्तोत्र-परम्परा का अन्त हो गया ।

<u>स्तोत्र-साहित्य की देन :</u>

भारतीय जन-जीवन एवं हिन्दी-साहित्य के लिए स्तोत्र-साहित्य एक उपहार माना जा सकता है । आध्यात्मिकता की अमर ज्योति को लेकर इसने सम्पूर्ण संसार के निर्माण का प्रयत्न किया है । मानव-जीवन के विकास में निरन्तर अनेकों अवरोध उत्पन्न होते रहते हैं, वह पथ-भ्रष्ट हो जाता

है, परन्तु स्तोत्रों की तत्वमयी चेतना उसे निरन्तर प्रोत्साहन देती हुई कार्यरत रहती है । जिस प्रकार जल की एक बूंद एक तृषित को जीवन-दान दे सकती है उसी प्रकार स्तोत्र भी पतित एवं भ्रष्ट मानव को प्रगति-पथ की ओर अग्रसर कर सकते हैं और ऐसा मानव केवल अपना ही कल्याण नहीं करेगा वरन् उसका अनुकरण कर संसार के अन्य प्राणी भी आनंद की प्राप्ति कर सकेंगे ।

यदि काव्य के रचना-विधान की दृष्टि से स्तोत्र-साहित्य का आकलन किया जाय तो उसकी उत्कृष्टता और भी महत्वपूर्ण मानी जायगी। आदिकाल से लेकर अब तक के स्तोत्र-साहित्य में समस्त अलंकारों, रसों एवं छंदों का जैसा उत्कृष्ट प्रयोग हुआ वैसा अन्यत्र नहीं । संगीत शास्त्र में भी स्तोत्रों का सर्वाधिक योगदान है । सम्पूर्ण स्तोत्र-साहित्य में गेय तत्वों की प्रधानता है । कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, प्रसाद, निराला एवं महादेवी के स्तोत्रों की संगीतात्मकता अत्यन्त ही भावमय और सरस है , साथ ही साथ उनमें संगीतशास्त्र के सभी प्रमुख रागों का भी प्रयोग किया गया है । इस प्रकार हिन्दी के स्तोत्र-साहित्य के आधार पर संगीत-शास्त्र का भी उचित अध्ययन किया जा सकता है । भक्ति-कालीन पदों की लोकप्रियता का एक प्रमुख आधार उसकी संगीतात्मकता भी कही जा सकती है ।

कला-पक्ष एवं भाव-पक्ष की दृष्टि से भी स्तोत्रात्मक पद उच्च कोटि के हैं । स्तोत्र-साहित्य का 'नखशिख' अपनी कलात्मकता का एक मनोहारी उदाहरण है जिसके बल पर स्तोत्रकारों को भक्त ही नहीं ,सच्चा कलाकार भी घोषित किया जा सकता है । आराध्य के अंग-प्रत्यंग का सूक्ष्माति-सूक्ष्म कलात्मक वर्णन और भावाभिव्यंजना हिन्दी-साहित्य की अमूल्य निधि है ।

स्तोत्र-साहित्य ने भारतीय जीवन को एक नवीन संदेश दिया है जिसके बल पर आध्यात्मिक जीवन में एक नवीन मोड़ आ जाता है । यद्यपि वैदिक एवं पौराणिक साहित्य में भारतीय धर्म-साधना के समस्त अधिष्ठान हैं और उनके समुचित प्रयोग की भी नवीन दिशाएं हैं परन्तु साथ ही साथ

स्तोत्रों से किसी न किसी प्रकार से सम्बद्ध है । पूर्व अध्यायों में स्पष्ट किया जा चुका है कि स्तोत्रों के द्वारा आध्यात्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं वैज्ञानिक अवस्थाओं का भी अध्ययन किया जा सकता है । इस प्रकार हिन्दी के स्तोत्र-साहित्य के बलपर मानव जीवन की सभी स्थितियों का सरलता से अनुभव किया जा सकता है । गायत्री एवं आदित्य -हृदय आदि स्तोत्रों की सफलता तो सर्वप्रसिद्ध है । नैतिकता की यथार्थानुभूति एवं सफल पथ-प्रदर्शन स्तोत्रों की मूल प्रेरणा है जिसे अपनाकर जन-समाज अपने सफल जीवन का निर्माण कर सकता है ।

यही "स्तोत्र-साहित्य" का अमर सन्देश है ।

।।दोहा।।

राम रमा रामानुजहिं प्रनवौं पवन कुमार।
श्री गुरु गनपति चरन भजि श्रीमत संमुउदार ।।१।।

श्री वागेस्वरि पद पदुम प्रनवौं परम पवित्र ।
मेघनाद के जुद्ध में वरनौं लषन चरित्र ।। २ ।।

श्री रामानुज मनुज नहिं धरनी धारन धीर ।
वंदौं जन दुष्र्श्रच्छमन लच्छ लच्मन वीर ।।३।।

।।घनाक्षरी ।।

प्यारो सीताराम को उज्यारो रघुवंस को अन्यारो जन पैजवारो न्यारो
रूरो रन को ।
रविकुल मंडन प्रचंड बल दंड भुज दंडन उदंडन सौं षंडन षलन को ।
समाधान रच्छक अपच्छ पच्छ लच्छमन अच्छ मन लच्छमन रच्छ दीन जनको ।
सिंहन को सर्म गर्म वंतन को गर्म गंज अर्म अवधेस को समर्म सत्रुहन को।।४।।

भूप दशरथ्थ को नवेलो अलवेलो रन रेलो रोप फेलो दल निश्चर निकार को।
समाधान कीरति उमंडी बल षंडी चंडी तिसोध मंडी कुल मंडी दिनकारको ।
इन्द्रमद गंजन को भंजन प्रभंजन बनैको मनरंजन निरंजन उभर को ।
राम गुन ज्ञाता मन वांछित को दाता हरि भक्तन को ज्ञाता धन्य
श्री ता रघुवर को ।।५।।

महावाहु भूप दसरथ्थ को कुमार मार हूतें सुकुमार जैत वारस मरन को ।
असरन सरन अमंगलहरन भार धरनी धरन मजबूत महा मन को ।
नंदन सुमित्रा को निकंदन अभिन्नन को धान जग बंध बड़ो वंधु सत्रुहनको ।
कंता उरमिलाको नियंता दुष्ट जीवनको हंता इन्द्रजीत को निहंता
षल गनको ।।६।।

।।छंद अनंग शेखर ।।

प्रवुद्ध क्रुद्ध कुंभकर्ण रामसौं विरुद्ध सुद्ध जुद्ध मध्य जुझ्झ गयो
स्वर्ग धाम सुम्मियो ।
परिअंत कलं कमैनि संकलंकनाथ धूर्त तूर्न पूर्न सैन पुत्रलोल चीख
चुम्मियो ।।
ज्वलंतं जंग जुझ्झ मैं अधूर्ज धूर्ज सज्जियं विसर्जियम चलौ सुवीर
वैगि छौटिन छुम्मियो ।
निवंधकौय जुग्म वंधं वंधुलच्छ वंधि कैव ली अजीत इन्द्रजीत जैति
घमड उम्मियो ।।७।।

।।घनाछरी।।

इतहूं प्रचंड दौर दंडन कठौर घोर धनुष टकोर छोर छौनी सौ
गगन मैं ।
मनै समाधान अंग दादिक समेत वाजे उमगि झपंत की सवंधे
छन पन मैं ।
काल ज्यौं करालकोप जगै ज्वाल माल मानौ होत है अकाल प्रलैकाल
त्रिभुअन मैं ।।
समर विधाता वीर विधिन कौ ज्ञाता अनख कौ जन त्राता राम भ्राता
महारन मैं ।। ८ ।।

ठाढयौ जुद्ध भूमि मैं त्रि सुद्ध राम वंधु विजै हीलैं की तौं लेत कोटि
रुद्र के अतंक कौ
क्रुद्ध हग दाहक दुवनद लदाहैं लेत लहैं लेत मानहुं त्रिकूट
गिरिवंक कौ ।
मनै समाधान दसौं मुषन मरोरे लेत छौटे लेत वंदि सुर सिद्ध मुनि
रंक कौ ।
रनकी झकोरे लेत सुभट लटौरे लेत सुजस वटोरे लेत टोरे लेत
लंक कौ ।।६ ।।

आयौ इन्द्र जीत दसकंध कौ निवंध वंध वौल्यौ राम वंधु सौं
अवंधकीर वान कौ ।
कौहै अंसुमाल कौहै काल विकराल मेरे सामहूं भए नरहै सान
यहै सानकौ ।
तूतौ सुकुमार वार लच्छन कुमार मेरी मारवे संभार कौ सहैया
घमासान कौ ।
बीरन चितैया रन मंडल रितैया काल कहर वितैया हौं जितैया
मघवान कौ ।।१०।।

इतै रमानंद उतै रावन कौ नंद बढ़ी मारियौ व लंद ज्यौं धर्न—जय
निषाद की ।
दुहूं रनधीर दुहूं धनुष्ण धुरीन कान कुंडल कौ दंड चंड मंडली विषाव की ।
भूप रन भूमर दिसान पर छाय सुरषंड घोर मंडित निनाद की ।
जावावली व्योम गिरवानावलीय दैषि वानावली लच्छन कुमार
मेघनाद की ।। ११।।

।।छंद कीरवान।।

इत चढ्यौ राम वंधु कपि कटक प्रबंध उत
रच्छदल वंध इन्द्र जीत समुहान ।
दुहूं वीर कुल रज्ज धर छत्र पन सज्ज
भट भीर गल गज्ज बल वज्जत निसान ।
जनु जलधि उमंड घन घट न घुमंड जुग छलन
छुमंड दल वद्दल मिलान ।
तहं तेजकौ निधान करिकोप समाधान वीर
लच्छमन सुजान फुकि फारैं कीरवान ।।१२।।

महल्लसिंह सम घुट्ट हक्कहक्क सहजुह लागे अन्न के
फुट्ट गिरैं टुहिन्नान ।
भिरै सूर समरथ्थराम रावन सपथ्थ करिहोत
लत्थ पथ्थ भर पथ्थ बलवान ।

कार्य जुथ्थ गाढ़ कंत गिरि पुंज पटकंत चाप चर्म
चटकंत लट क़ंत जातु धान ।
तहं तेज को निधान ० ।।१३।।

जहां करि कै झपट्ट जिमि पावकल पट्ट मट पट
किच पट्ट दह पट्ट असुरान ।
गहि हथ्थन सौं हथ्थ किए रथ्थन विरथ्थ गज मथ्थन अमथ्थ
चले सथ्थ तजि प्रान ।।
धरि यैक्क नफटक्कि युव पट्ट सै पटक्कि गहि यैक्कन
पटक्कि तै मटक्कि ,
असमान तंह तेजको निधान ० ।।१४।।

जहं सैल्हन धमंक तेग चपल चॉमंक तीर तोमर
तमंक मच्यौ घोर घमासान ।
घने घावन धमंक मुंद मरन दमंक सार झारत झमंक
हांकि हक्कत जवान ।
फटिहै दरकंत फुटै हाडकर कंत कटि मुंड
फरकंत छटकंत मुरदान ।
तहं तेज को निधान० ।।१५।।

हनुमंत कीर पेट कै लंगूर कीलपेट दल दुष्टन दपैट
चरपैट चषलान ।
बजे नष चट चट बजे दंत्त झट झट गिरैं
श्रौन घट घट फट फट अरुजान ।
कपि कूह किलकार षल मुंड भिलकार परे पैट
पिलकार कटै निश्चर निदान ।
तंह तेज को निधान ० ।।१६।।

इत कीस बजरंग उत राक्षस अभंग दुहूं ओर
सफ जंग दल बद्दल मिलान ।
षल वीर हरषंत कर चापर करषंत वान
बुंद वरषंत जनु टीडियन उड़ान ।
लगे वारि उमदंत कटे दंतिय सदंत
गिरि श्रृंगन उदंडत वगपंति अनुमान ।
तहं तेज को निधान ० ।।१७।।

कहुं सुंड धर तुंड कटि टूट्टहि मसुंड जनु
लुट्टहि सुगुंड व्याल कुहर कटान ।
कहुं लागे भट अंग सक्ति तोमर उमंग
जनु पैठत भुजंग बल मीक अकुलान ।
कटैं कायक ललल्लवी लंघा यव ललल्ल चलें
धारअ ललल्ल वही श्रौन सिरतान ।
तहं तेज को निधान ० ।।१८।।

धर छत्रपन छह पैरे षेत करैं कूह कपि
कौणाय समूह जुग कूल सरसान ।
जह कच्छप कपाल वने मच्छ करवाल सिर कुंतल
सेवाल हय ग्राह उपमान ।
गिरैं ग्रीव गजराज मक्र करभि समाज
उस नीक बाजिराजि वृंद उदाक समान ।
तहं तेज को निधा ० ।।१९।।

लषी देव घमासान चढ़े गगन विमान चित्र पुत्रिका
समान रह्यौ भूलि मघवान ।
चले संभु सिरताज जुद्ध दरसन काज संग
जोग्गिनि समाजवंत पीसत समान ।

सजे भूत वह वह वजे डौंरू डह गौरी गांव
गह गह जोर जोग्गिनि सुगान ।।
तंह तैज को निधान ० ।।२०।।

गुहैं संभु मुंड माल गाजै प्रमथ निहाल
प्रेत मारत षुसाल भूत जाल भरुहान ।
नचै भैरव उत्ताल प्रेत देत करताल ताल पूरत
वैताल षटताल सुरसान ।
भरि षप्परन सीस देति कालिका असीस
षगषि भिरषवीस षाय आमिष अघान ।
तहं तैज को निधान ० ।।२१।।

षाय घायन समूर रहे वीर भरपूर
दुहं सैन चकचूर भए सुरषि भिरान ।
कहुं वानर वरुथ्थ कहुं रैन चर जुथ्थ
गिरैं लुथ्थन मैं लुथ्थ गिद्ध गिद्ध कलुमान।
करि निग्रह विलास जनु फूलत पलास
धरि हिंमत हुलास होत मनन मलान ।
तहं तैज को विधान ० ।।२२।।

एकै दौरि यैक वीर नष दंतन सरीर
करैं कैयो षड चीर जिमि चीर चीर जान।
गल गज्जहिं कपीस डारैं ऊपर गिरीस भए
रैन चर षीस सद वैसीस कचरान ।
एकै बूडै सिंधु नीर लगे रामानुज तीर भए सेहरत धीर
भट भीर महरान ।
तहं तैज को निधान ० ।।२३।।

कहूं हथ्थिन सों हथ्थि कहूं रथ्थिन पै रथ्थि
कहूं बथ्थिन पै बथ्थि कपि कौठगथ मिलान ।
कहूं मुंडन पै मुंडक कहूं रूंडन पै रूंड
कहूं तुंडन पै तुंड परे लोटत धरान ।
मच्यो जोर सफजंग टूटैं फुट्टत नृसंग
छिन्न भिन्न अंग अंग भगे राछ्छस जतान ।।
तहं तेजको निधान ० ।।२४।।

रनजीत करैं कूहरिच्छ साषामृग जूह भगे
वन्नर समूह लषि वीर षिसिआन ।
महावली मेघनाद गल गज्जसिंह नाद देषि
जूझै मनुजाद कियो माया को विधान ।
बन्यो राति को प्रकार दसौ दिसा अंधकार
नहीं सूझै निज कर कपि लागे अकुलान ।।
तहं तेज को निधान ० ।।२५।।

उठे वारिद उमंड घोर घटन घुमंड
झंझा झुकन झुमंड धूरि धुंधर उड़ान ।
भई बंद कपिदृष्टि लागी होन औन वृष्टि
मल मूत पीव सृष्टि हाड़ दंत कैसकान ।
उठी डाकिनि अपार सिर छूरिन उतार
भरैं लोहू सों कपार करैं काटि कतलान ।
तहं तेज को निधान ० ।।२६ ।।

बढ्यो जोर पारावार तहुं वीर धारापार नहिं
जासु पारावार ग्रह ग्राह उछलान ।
करैं असुर अजंक मिलैं नभ मैं निसंक अनदेखे वै
हंक हंक अत्र घालत अमान ।

फिरैं भूत प्रेत धार मुण्ड वोलैं मार मार
कपिसीस असरार सार फार फहरान ।
तहं तेज को निधान ।

घालैं कुंत सक्ति जाल करवाल करकाल
गिरैं दंड भिंदिपाल सिलासीरुन जघान ।
तीर तोमर चलंत पासु परिघ परंत
मुदगर वरसंत करैं वीर फरसान ।
तम सूझत न अंग करैं कैसे सफजंग गाजैं राक्स
अभंग कपि लागे विलखान ।
तहं तेज को निधान० ।।२८।।

कपि वृन्द रनधीर लखि व्याकुल सरीर तव
रामानुज वीर तानि कान लोकयान।
हिअराम पद धारि मंत्र राम को उचारि
अरि उग्रता विचारि घाल्यो राम अत्रवान ।
भयो अंधकार नास मिट्यो माया को निवास
छायो रविको प्रकास देखि परे जातुधान ।
तहं तेज को निधान० ।।२६।।

रन इन्द्रजीत मंड तजि मायाको ममंड जैते
अस्त्र सस्त्र छंड तैते काटै वलवान ।
दसरथ्य को सुपूत सारमार मजबूत कियो सीस
बिन सूत दल्यो दल को निसान ।
सर एक गुनकाटि सर एक धनु काटिसर
चारो हय काटि कियो विरथ अमान ।

तहं तेज कौ निधान करि कोप समाधान

वीर लच्छन सुजान फुकि फारि कीरवान ।।३०।।

।। घनाक्षरी ।।

जपतप जोग जज्ञ धारना समाधि साधि

साधु रीति करि परि हरि छल छुद्रमें ।

विधि सौं लइती मांगि इन्द्रजीत सांग जगै

जामें ज्वाल माल ज्यौं कराल काल रूद्र में ।

मैंने समाधान घाली लच्छमन वच्छतकि

तच्छन प्रचंड बलदेषि रन मुद्र में ।

पौन पूत झपटि छलीन कौ पटकि लई बीच

ही झटकि दई फटकि समुद्र में ।।३१ ।।

पारावार परीतेज भरी लषि सांग क्रुद्ध

लागी न धरनि धराधार धरि धाइयो ।

देवलोक दावत मगावत महरलोक लोकपन

ठोकत विरंचि लोक जाइयो ।

मैंने समाधान ऐरे अधम निलज्ज विधि वर दै

असुद्ध जुद्ध मध्य को पठाइयो ।

छक्कर लगै हौंसठ गायो जस टक्कर कौ

फूंठ को अठ्कर को फक्कर बनाइयो ।।३२।।

विधि उर क्षोम क्रुद्र छक्कर कौ छायो वेगि

सुमिरि वोलायो रिषि नारद उदार कौं ।

कह्यो सुत जौलौं जंग पौन पूतरै है तौलौं

मेदनू न पैहैं सेल्ह सेष अवतार कौं ।

मनै समाधान हनुमान कौं चलायो मुनि
जानि वाले जाहु अब जीतो जैतवार कौं ।
सील मति चीन्हीं ज्वाब जौमकीन कीन्हीं फेरि मंत्रित कै
लीन्हीं दीन्हीं रावन कुमार को ।।३३।।

अरि विचलाव नीव ढावनी विजै की वह
वीर विचलाव नीसकतिकर मैलई ।
त्रिभुवन सालाकी हहाइ हाइ हाइ मची
ज्वाला की दसौदिसान दारुन छटा छई ।
मनै समाधान प्रलै पावक समान कंपमान
सुर असुर महान मुरछा मई ।
घोर घन घोरत अनंत दूर फोरत महीतल को
मोरतल चली गई ।।३४।।

सैल्ह कै लगैते गिरे लीला सौलषन धायो
सषान समेत मेघनाद हूं संभरि कै ।
मनै समाधान को उठाइ सकै सेष रुप
मारे जौमवारे षल हारे बल कटिकै ।
तौलगिं सिधारो अनियारो गिरि डारो
मीडियारो पौन पूत दल राक्षस कचरिकै ।
नीति को निबंधकरि जसको प्रबंध
दीन वंधु को वधुल्यायो कंध पर धरिकै ।।३५।।

जाको तेज और ब्रह्मा उकु कि मारै
लोक चौदहौं उजरे जारे सुरासुर भीरकौं ।
सातहू समुद्र जाकी स्वांस तेज सकिजात धरनी धसकि
जात धारत न धीर कौं ।

मनै समाधान मानौ विधि को बषानौ बलि
लीला मुरकानौ कछू पाव तन परिक्रौं ।
नैकु फूत कारै तौ चराचर चिकारै जौ दुनी कौं करै
छारै कौ पछारै ताहि वीर कौं ।। ३६।।

प्रलैं काल प्रलै पवमान प्रलै मानु प्रलै रूद्र प्रलै
पावक जनक पंचगन कौ ।
मैटि कै असेष ब्रह्माण्ड कौ विसेष सेष
आपुही रहत जो सहस्त्र महाफन कौ ।
कौहैं राम वंधु सौ दुनी मैं दीन वंधु
ओड बँधन प्रबंध पाल्यौ विधि कै बचन कौ ।
होनी कौ फिरैयाकौ समाय कौ धिरैया ब्रह्मद्रद कौ
हिरैया कौ भिरैया दच्छमन कौ ।। ३७।।

अरि दल मीषन विभीषन विभावरी मैं
लियेउलमूक ऊक दाहकर तल मै ।
सैल्ह उर्ध्ववाल की जलूस मैं जरैहैं सब गैर गैर
डेरा डेरा फिरयौ कपि बल मैं ।
मनै समाधान तहां सावधान बैठौ वीर
मुरछा विगत तरयोतेजै कन फलमैं ।
रिच्छनकौ कंत विरदैत वलवंत देष्यौ जोम सौ
ज्वलंत जामवंत एक दल मैं ।। ३८।।

बूझत वृतान्त जामवंत यौं विभीषन सौं
कहां पौन पूत जो सपूत समरन सौं ।
जानै अंजनी कीनी की वार जननी की वात वंदर
अनी की जोम नीकी करै मनसौं ।
मनै समाधान हनुमान की हकीकत कौं
सकीकत बुद्धि जो नबोलत बचन सौं ।

अरिन अजीवकारी रघुवर जीव सम
जीवत है वीर कौन जीवत है तनसौं ।।३६।।

बचन विभीषन बषानैं बुद्धि-वंत लषो जामवंत
प्यारो तेरो महाहित सील मैं ।
जैसो पौन पूत मैं तिहारो मजबूत मौहि देषि कै
सपूत सदा समर सवील मै ।
भनै समाधान असौ नेहु निरषो नर विनंद
मैं न राम मैं न रामानुज डील मै ।
के सरीस बल मै न अंगद असल मै न रिच्छ-कपि
दल मै मैनन लमै नली लमै ।।४०।।

रिच्छ कुल कतक त्यौ रच्छ कुल कंत वाही संत
नैदुरंत काज कीन्हौ जगदीस है ।
वाके होत हंक मच्चौ लंक मैं अतंक कपि
संकजान देवौ वंक नंकत नदीस कै ।
भनै समाधान हनुमान सौन आन मरदान
घमसान मै समान जौ फनीस कै ।
जीव तन जीवन सैवा के बिनु जीवतहीं
जीव तन जीवत ते जीवत कपीस के ।।४१।।

चले रिच्छ पतिरच्छ पति विधि कहत उदंत ।
पीछे विलयत राम के षरो लष्यौ हनुमन्त ।। ४२ ।।

।।घनाक्षरी।।

जामवंत सहित विभीषन सिधारे राम विकल निहारे
लई लीला कील हरि है ।
हाइ सेष अनुजगयो तूं परलोक मै हूं मरि हौं
ससोक कौ विलोकिन ह हरिहै ।।

मनै समाधान जैहै बंदर हू कंदर न विरह
जुरागिनि सौ जानकी हू जरिहै ।
जय-है जहां को मन जैहै सीतहां को
यह साको कै विभीषान कहां कौं पगुधरिहै ।।४३।।

लच्छन मूरुछातें अंपद सकाने देषि
अति अकुलाने देषि साषा मृग मीरकौं ।
विकल विभीषान वदन कुभिलानै देषि
सौक सरसाने देषि रिच्छ कुल हीर कौं ।
मनै समाधान कपिराजै कल पति देषि
विलपत देषि हाय हाय रघुवीर कौं ।
साहस को भान रामदल को निसान
तहां आन हनुमान कह्यो यारो धरो धीरकौं ।।४४।।

।। सवैया ।।

भौजन पीछे सदा ही करैं फल भौजन आछे कराइके मोकहं ।
सोर सोआइके मोहि सदां सदा पीछे चले गई चालवा सो कहं ।।
तूरन मोहि चल्यो तजि मोह महासुष चाह्यो न चाहिए तोकहं ।
हाय हा लच्छन तूं पहिले बिनु मेरे गए क्यों गयो सरलोकहं ।।४५।।

।। घनाछारी ।।

धिग हनुमान को अमानव लवान धमसान मै
पलाय प्रान आसरो धरत है ।
आपु मजि आयो हाय तोकहं जुझायो
सैल्ह हू ते नै बचायो सत्रुडंक न डरत है ।
मनै समाधान सार झारन झरत लषि
वीर न लरत भयमानि कै टरत है ।

कीरति सोहाई सूरताई की वहाई करै
जंग क्यौं सहाई दूजो माई का भरत है ।।४६।।

कपि दल पति वेर वेर विलयत प्रलयत
कलपत जलपत रघुनायको ।
मेरी कटी बाह कौन करेगो समाह जाके
बलके उमाह सौं धरैते धनु सायको ।
मनै समाधान और सुलभ जहान सब सानमिलै मान
मिलै आन मिलै पायको ।।
तात मिलै मात मिलै सुहृद सुजात मिलै
बहुरिन भ्रात मिलै सौदर सहायको ।।४७।।

प्रभुको प्रलाप नर लीला को विलाप हाहा
लच्छमन जाय करै कौन ताकी थिनती ।
बृथा हथियार बृथा जीवन कै जाये की जै
छाँड़ि दीजै वान औ कृपान प्रान मिनती ।
समाधान ऐसी लषिराय उर आधि भो अगाध
अपराध निजनाम सौं हरी छिनती ।
भारत गरूर सूर ताके रख पूर पूर
हरि के हजूर हनुमन्त करै विनती ।।४८।।

।।दोहा।।

विषम जषमल षिल षान तन विलषत जीवन काज।
दीनवंधु के दीन सुनि बचन कुप्यकपिराज ।। ४६।।

सातहू सरितपति सातउ अचल बसु कुल गिरिदसौं
छिति जामै सचि अतु है ।

एक नम मंडल अषंड नव षंड जुत
भूमि आदि चौदहू भुवन मजिअतु है ।
ऊभार समान परमान ब्रह्माण्ड जान जैहै
कहाँ जातुधान काहे लजिअतु है ।
करुनानिधान मरदान बलवान रघुरान
क्यौं निरास है सरास तजिअतु है ।।५०।।

मौतें बलवान लंकनाथ है निदान
सुनिराम की जुवान हनुमान समुभावहीं ।
दैव जोग पाइ दुष्ट जनकरि जाइ
मान बडे को घटाइ व उवारी नहीं पावहीं ।
मनै समाधान मान सहत महान क्षुद्र क्षुद्रता
जहाँ न जस कुजस जो गावहीं ।
देषौ महीभानु गिलै भानुहिम भानुकहा
नीचसुर भानु बड़ो भानुसों कहावहीं ।।५१।।

बोले रघुवीर हनुमन्त सों गहीर सुनु पौन के सपूत
पूत तूत नृपगन कौ ।
मनै समाधान परिवार योग काजे नीके
विभव विराजे सुष साजे सबै मनको ।
वषत वितीत भए संपति जो दौतो कहा
कौन काम जल षोह जुरै सनुतनको ।
अरिनको अपकार मित्रनको उपकार होइ सकै
सतकार जामै बन्धु जनको ।।५२ ।।

।। दोहा ।।

वीर घातनी घातकी सुनहु बात हनुमन्त ।।
द्वुतियदिवस निरफल जतन होत उदित लषिअंत ।। ५३ ।।

॥घनाक्षरी ॥

बोल्यौ कपि होकि नौकि ठौकि भुजदंड
चंड चहत अगाध अपराध बलीमस कौं ।
मनै समाधान प्रभु कीजै फुरमान तौ मरोरौ
भानु तोरौं तेज तोम रसफस कौं ।
मैठौं महा महिष समेटौं जम फांस फारिमैटौंना
उदंड काल दंडन कनक सौं ।
दोनौं सुधानिधि कौं निचोलौं रघुवीर कै पताल
पै पयानौ करि आनौ सुधारस कौं ॥५४॥

कहै जौन जौन परै पावत है तौन तौन
मन गुनि गुनि सुनि सुनि कापिवैन कौ ।
समुफि अकाल मलै काल प्रभु बोल्यौ
आनौ लंकपति वैदकौ दुषी कौ सुषदैन कौं ।
मनै समाधान मानि हुकुम धनी कौ
अंजनी कौ सुत दौरि लह्यौ लषन कै चैनकौं ।
राम कौ रुषौन अंग याकौ तौ दुषौन ल्यायौ
लंक तै सुषौन सैन सोवत सुषौन कौं ॥५५॥

लायौ पौन सुतन सुषौन उठि आयौ ताहि बूफ्यौ
उपचार कौ विचार रघुराजहीं ।
बोल्यौ वैदवान सौं तेरै सनुधान पै जुवान
आन भांति मैं कहौं नरियुकाजहीं ॥
रजनीं प्रकासी चंदिकासी दीपिकासी देषि
ल्यावै भट मै जिए जरूर कपि सहीं ।
सल्ली भूतल षानविसल्ली भूत होहिं मिलै
दोन गिरि वल्ली जौविसल्ली रस आजहीं॥५६॥

द्रौन गिरि ल्याइ वौकि ठीक रघुवीर अग्र
बौले कपि आपु आपु विक्रम बहर मै ।
नल कपि जावै तीनि राति मै ले आवै
लगै दोई राति दुविद मयंद कोउ हर मै ।
मनै समाधान वालि वंधु बलवान नील सील बल
ल्यावै एक जामिनी अहर मै ।
पैजकौ पलैया दानौ दल को दलैया
वीर अंगद चलैआ ल्यावै चारही पहर मै ।।५७।।

सुनि कपि वीरन की औधिपति औधि
चितचिंत चकचौध कामकौन से सपूत कौ ।
राति ही अराति कृत घात क्यौं सुराति परभात हौत
जात गात प्रात मजबूत कौ ।
राम मुष मुद्र बूड्यौ संकट समुद्र बल छौडि
महारुद्र अवतार कौ अकूत कौ ।
सौक मन फूल्यौ त्यावस वन कौ मूल्यौ
येक फूल्यौ लष्यौ बदन सरौज यौन पूत कौ।।५८।।

रघुपति वौर हैरि पवन किसौर वरजौर
कर जौर कर करुना समाजकौ ।
मनै समाधान हनुमान वीर बौल्यौ रचि अंबर
अडंबर षगंवर के साजकौ ।
साठि लाष जौजन इहां तै गिरिराज
महाराज की कृपातैं ल्याऊं गाजत गराजकौ ।
देव चिरजीजै छिनकीजै छमा अब मौहि
दीजै धरि आवन सुषैन वैदराजकौ ।। ५९।।

भूतल उपारि डारौं हिमगिरि गारिडारौं
लंकहि उष्पारि डारौं मारि डारौं रावनौ ।
सिंधु पूरि डारौं करि धूरि डारौं विधि चक्र
चूरि डारौं मेरु फूरि डारौं महिरावनौं ।
मनै समाधान मघवान मीसि डारौं असुरान मीचि डारौं
पीसि डारौं अरि- आवनौ ।
द्रौन गिरि ल्याऊं मूरि जीवन पिआऊं
कहौ प्रथम जिआऊं नाथ तेरौ मन भावनौ ।।६०।।

लंक में सुषेन धरि आयौ पौंन पूत
बोल्यौ समरस पूत देव सोक फटकत हौं ।
तेरौ दास जावै फुर मावसजी पावै ह्वै आपसु मै
रहै सबै सूर कटकत हौं ।
मनै समाधान गढ फोर फटकत अरिकौ
नष टकत भुव ताहि पटकत हौं ।
सरसौं कृसानु बीच जैसे चटकत काज
कैसे अटकत द्रौन लीन्हे लटकत हौं ।। ६१ ।।

जाइयौ अवध सुधि ल्याइयौ कुसलताकी
लैकै यौ सिवा पन भरत मरदान कौं ।
मनै समाधान ध्यान धरिकै सिया कै पद
करिकै प्रदच्छिना प्रनामै मगवान कौं ।
ठोकि सुजदंड सौ उदंड दौर दं दावि
दिसन घमंड घोष दौयौ आसमान कौं ।।
घोर गल गज्जिकै सपूत मैनिमज्जिकै
समीर सूनु सज्जिकै तयार भै उड़ान कौं ।।६२।।

मैटि सब साथ फेरि मोछन पै हाथ
रघुनाथ को नवाइ माथ तेज फूलाफल को ।

वेग पव मान तें विमान ते विमान हरिजान हूं
तै मन तै महान महा-बल को ।
मनै समाधान मनसत्वर उडान तान
चल्यो हनुमान लग्यो पंथ मैन पलको ।
राछसन रोक्यो तिन्हे ठीकरन टोक्यो
कपि जाइकै विलोक्यो तब लोक द्रौनाचल को।।६३।।

प्रज्जवलित ज्वाल प्रलै ज्वालनकी दीपति कै
दीपत प्रदीप दीपिकान के बहल की ।
वारतू विभाकरउ एकी भाभली कै धो
वलावली लगी जे बजगी देवदल की ।
मनै समाधान हिमवान भामिनी है कै धौं
दामिनी है तेज रासि तारन कै भलकी ।
जकाज की छोडि टकाटकी अरिनाहि जाहि
हकाहकी देषि भकाभकी द्रौनाचल की ।।६४।।

सवै गिरि वेलीदीप सैली सी नवेली छंद चेली
दुतिरै ली देष भ्रम सो ससेटिकै ।
फेर जो पठायो कामजात है न ठायो
वंध वांधि ठीक ठायो है उठायो चरपैटिकै ।
मनै समाधान कू धो ककुभ निमूद मूद गगन
गरज्ज बूंद षालन षषोटिकै ।
चल्यो कपि लैकै द्रौनाचल कों समूल उनमूल
भुजमूल सो लंगूर सों लपेटिकै ।।६५ ।।

चलत समीर सूनु सुमिरयो समीर रघुवीर हि
वीर बढ्यो बलके विलास मै ।
बढ्यो उमड़ाय गिरिवर न ढहाय पाय पितु
की सहाय कपि हरष्यो हुलास मै ।

भनै समाधान हनुमान रघुरान की
जुवान ज्ञान भान भयो अवध के आस मै ।
दिसन दबाव दब लीन विलमावतष
पावत षलन उड़ो आवत अकास मै ।।६६।।

कौसल सुतासौं कह्यौ मेरो भुजडे रोडस्यौ
भीषम भुजंग पैठि भीतर भवनको ।
लच्छमन मातु कों देषात भौ अनै सपीमाति राति
दु:स्वपन ताके दोष के दमनको ।
भनै समाधान सुनि प्रोहित बशिष्ट वीर
मरव गरिष्ट लै अरिष्ट के समनको ।
पास भुजदंड के प्रचंड चाप दंड जज्ञ मंडल के
मंडप मैं मंडित हवनको ।। ६७ ।।

चंदन को ईंधन अपूर कर पूर पूरत
प्रसून भर भूर घृत सानिकै ।
मृदुल मृनाल अम्रनाल पुंडरीकमिलि
दैव तुंड कुंड दई आहुतिरिचानिकै ।
भनै समाधान हून्यौ नारिकेल जौलौं तौलौं
पहुंच्यौ कपीस धरे भूधर भुजानि कै ।
आवत निहारयौ उर असुर विचारयौ वीर भरत
हंकारयो तीर मारयो कानतानिकै ।।६८।।

आयो लषितीर तीर तैज जगमग्यौ मन धीर
डगमग्यौ पै न डग्यौ सो उगनतें ।
राम राम कह्यो [illegible] लह्यौ पैन ढह्यौ
अद्रिग ह्यौ कपि हद ठहारि लषगनतें ।

मनै समाधान वीर भरत के मारे परचंड
भुजदंड बलवान की लगन तैं ।
भिदुर सौभेदि गिरि भेदि कै गिरायौ गिरि अैसौ
गिरि देह गिरयौ गिरिसौ गगनतैं ।।६६।।

वानके लगते डग्यौ परनसौ पवन पूत
घूमि घूमि घोरघन घेर मे घिरतमो ।
लोटत पलोटत करौटि लौटि लौटि
नभ लौट न कबूतर लौं फेरि लै फिरतमो ।
मनै समाधान अभिमानी हनुमान मैं
मैं पौन चक्र फेरालगि ढेरा सौढिरतमो ।
नगलीन्हे नट सौ नट तन मऊ परतै
ऊपरते तरपर व्है भूपर गिरतमो ।। ७० ।।

गिरयौ कपि वीर लाग्यौ भरत को तीर
मुरछित भो सरीर रनधीर बलवंत ।
बिना विश्राम लेत फेर फेर नाम
हाय राम हार मैसलच्छन हा अनंत ।
मनै समाधान सुनि नाम की जुवान
अजरज यानि जुरि दौरि आए सवसंत ।
ठाढ़े सब घेरैं दृग फेरैं कपि नेरैं
जन बेर बेर टेरैं पै न हेरैं हनुमन्त ।।७१।।

पुंष सैका सायक ललाट लग्यौ छत परयौ छित
मुरछि दरसाइ दंत पीसनै ।
विकल कलंदर सौ बंदर निहारि करयौ
मंदिर मैं मंदर भरत अवनीसमै ।

भनै समाधान रघुवीर जन जानि परे पग
सब आनि सनमान पुरेदीसनै ।
घरी टरी नाहिं षोद षरी हरी जरीकरी
औषद गिरि की हरी मुरझान मुनीसनै ।।७२।।

देषि अकुलात मात गात जन जातबात
जातयौं बतात मोहि जाने रामदल को ।
क्रम सों पवित्र कह्यो रामको चरित्र वीर
घातिनी विचित्र घाय आयो महाबलको ।
भनै समाधान मोहि प्रभु ने पठायो
सब काज तूंन ठायो हौंल चार मयों ललको ।
राषिए गरूर मिटै लषन करूर
रघुराजरूर भेजिए जरूर द्रोनाचल को ।।७३।।

बैन सुनि आंसू चले चषान हहाय हाय
लषन लषन कहि मोहि पह्यो धरपै ।
बोल्यो वीर चेत तोहि प्रभु के निकेत भैजों
भूधर समेत कहु कौन हेतु डरपै ।
भनै समाधान हनुमान के हिए में अभिमान
जानकान लोक मानतान करथै ।
दोनासो उठायो द्रोना चल कोठि लोनाकपि-
राम कोषि लोना पौन छौना धरयो सरपै।।७४।।

गिरि लीन्हे गिरि ते गरिष्ट कपि बैठो
जानि बैंचोवान पैठो गुन मध्य चला-चलको।
उतर्यो परिच्छा राम इच्छा समलोषिये
षिसिच्छामारी भरत सुजान भूरि बलको ।
भनै समाधान बंदि सबन संदेस लैके
कुसल निदेस देके कैकै आपरलो ।

रूंधौ रूकै कौन कौ समूधौ करिकाज वीर सूधौ चल्यौ
पौन कौ सपूत रामदलकौ ।।७५ ।।

दरवर दौर रोक्यौ सरवर तीर
हरिकथा हरवर सुनी जाय पैनुहितमौ ।
संत जानि सीष्य तक पट मुनि सीष्य तौलौ
दीपदिग माग तौ दिवाकर उदितमौ ।
मनै समाधान कपि विलष्य विलंब लष्यि
रिपु माया फूल छिन मूल कैरू हित मौ ।
लच्छन सुजान गुरु दछिना विचार
परदछिना दै कर करदच्छिना मुदित मौ ।।७६।।

मीड्यौ महाकाल सौ कराल कंघ काल
प्रलैकाल सी अकाल परीकालनेमि माथ पै ।
मनै समाधान कोटि गंध्रवनि गंज मद मंजकरि
पंथिन के साथ मैस नाथ पै ।
ग्राहीकौ पछारि करि छलिन कौं छार मारि
मायावी सुछार कपि कहै रघुनाथ मै ।
अरिन भिरौना कपि कटक निरौना यह
आयौ पौनछौना लिए द्रौनागिरि हाथ पै ।।७७।।

पिंग चष वारौ जन पैज रणवारौ वज्र
दंतनष वारौ जुद्ध मणवारौ जूप है ।
बंदर अनीकी जौमनी को रच्छपाल
अंजनी कौ करलचंद रामचंद कौ चमूप है ।
मनै समाधान लंक परकौ जरैया लंक पतिसौं लरैया
उदमट मट भूप है ।

पौन पूत पहुच्यो कटक उपकंठ जो सुकंठ
को सहैया सितकंठ को सरूप है ।।७८।।

बंदी भूत अरिहू अनंदी भूत रघुवर मंदी भूत मेघनाद
सोध सुधि पायें ते ।
भनै समाधान दिवलच्छी भूत भानु तेज
तुच्छी भूत रंगगढ लच्छन ठहायें तैं ।
दंगीभूत दस मुष तंगी भूत तरजडमंगी भूत
जानकी अडंगीजस छायें तैं ।
भंगी भूत असुर अभंगी भूत रामदल दंगी भूत
सुख जरंगी भूत आयें तें ।। ७६ ।।

दुविदमयंद आदि मर्कट कटक चांडो
तिन मैं चटकबे अटक छिति छानि कै ।
भरतकों भेटि मनुजाव कुल भेटि
जुद्ध जसकों समेटि फेटि विक्रम को ठानि कै ।
भनै समाधान आयौ वीर रनधीर
नीको दूरि हीते करत प्रनामै सीस मानिकै ।
वीर रस भरयौ तनसार फार फरयौ
लै लंगूर गिरि धरयौ परयौ राम पद आनिकै ।।८०।।

द्रोन गिरि ल्यायो पौनपूत सिरनाय
आप भायो यौं सुनायो कपिराज रघुराज कों ।
भनै समाधान कथ काली कों पछारि आयो डारि
आयो षेत काल नै भी सिरताज को ।
रिपु मद जारि आयो सुजस वगारि आयो
अवध जो हरि आयो भरत समाज को ।
विघन विडारि आयो असुर संघारि आयो
रारि आयो जीतियों सुधारि आय काज को ।।८१।।

सुन्यौ दीनबंधु बालिबंधु सौं प्रबंध कर कंध
पग परयौ देखि बोले कपिराव सौं ।
विविध प्रकार एक एक उपकार पर
प्रान मैं निछावरि किए हैं चितचाव सौं ।
और अनगनीथ नीतौ सांवनी हाल ताके
रिनी हम तेरे प्रभु कहिके सुभाव सौं ।
सुषान समेटबै कौं सौ कमेटबै कौं हनुमान भेठबैकों
भगवंत उठै भाव सौं ।। ८२।।

उठे राम देखि कपि बिनती बखानी
जीति जानकी न आनी नाथ कहा मजबूत मैं ।
विंध्य करि धूरि सिंधु पूरिनहिं आयौ चक चूरि नहीं
आयौं मै त्रिकूटाचल तूत मै ।
मनै समाधान भुजवीस हू न ल्यायौ
काटि सीस हू न ल्यायौ दससीस के अकूत मै ।
बाधि बड़ी थाप आपकी जन मिलाप कही
आपके मिलाप जोग कहाकरतूत मै ।।८३।।

जनमत हीं अंजनी को महावीर नभ कू धौ
रनधीर बल विक्रम उमर को ।
मारतंड मंडल अखंड मुखमेलि लियो
झेलि लियो जानै तन वज्र वज्र धर को ।
मनै समाधान असो पौन को कुमार
गिरि द्रौन को लिआयौ ताकीको न सीउकर को ।
लेप न लगायौ बेगि वीर कौं जगायौ
सोर कटक मै छायौ आयौ दूत रघुवीर को ।।८४।।

आयो बजरंग अंग लेपन लगायो
जंग जालिम जगायो शूली मुरछा छूठत भो ।
घाय पूरि आयो काय ज्यों को त्यों सुहायो
द्रौनवल्ली को प्रभाव संग पौरुष पुठत भो ।
भनै समाधान गाज्यो धरनी धरैया सुनि
ससकि संसक लंक पतिहू लुठत भो ।
राम रंजिवेकों दल सोक गंजिवेकों
मेघनाद भंजिवेकों काल जुद्ध सो उठत भो ।।८५।।

उठो विकराल इन्द्रजीत को सोकाल रनरोस भरयो
लाल जोर ज्वालन जगायो है ।
बोल्यो सिंहनाद करि धनुष को नाद
कहा क्रुद्ध मेघनाथ छल छतकों नगायो है ।
षादिर अंगार सो हलाहल अगार सौं
अंगार कसे अच्छ ओज उग्र उमगायो है ।
मेटि दुष भ्राते भरभुजन समेटि उतकंठ सौं समेटि
राम कंठ सौं लगायो है ।। ८६ ।।

दशमुख नंद रमानंद को सुघोर जुद्ध गिरे
दुहुं ओर भट कौन गवै केते हैं ।
भनै समाधान उठे बांहर अमान सूधे
जूझे जातुधान भए मुक्त सब तेते हैं ।
राम भक्त नक्त परे समर असक्त सक्ति ज्वाल के
जलूस जोग जरे कपि जेते हैं ।
अवनि गिरैया गिरि द्रौन के दरस पुन्य
पौन के परसतन को नकैन चैते हैं ।।८७।।

उहां दसकंध द्रौनाचल कौ प्रबन्ध सुनि
चेत्यौ रामबंधु जानि चिंता सौं चपत भौ ।
महाकाय निश्चर निकाय अधिकाय अतिकाय
त्यौं अंकपन सौं कपन कपत भौ ।
भनै समाधान पितु आपसु कौ मान मैघनाद
बलवान घमसान कौथ पत भौ ।
साधे करबालि का चढ़ाई मुंड मालिका
निकुंभिलासै कालिकाकी मालिका जपत भौ ।।८८।।

इहां होत प्रात वीर बंका राम भ्रात
मैघनाद कै निपात हेतु षेतु कौ गजत भौ ।
सीस जगदीस कौन वाइ परि पाइ दै
परिक्रम त्रिविक्रम लौं विक्रम बजत भौ ।
लच्छमन पच्छ चल्यौ अच्छ कौ
विपच्छ तिमिरिच्छ पतिपच्छ ना तजत भौ ।
लच्छन अभंग कपि रिच्छदल संगरन रंग की
उमंग सफ जंग कौं सजत भौ ।। ८९ ।।

पैठे सप्त पताल लुक्कि बैठे सुरेसतट
करै कोटि माया न धरैया थान कोटिभर।
जपै कोटि भैरवन कोटि काली अवराधय
जज मंजर चिकोटि कोटि रत ।
जज्ञहि साधय उड्डय अकास वुड्डय समुद सत
संकर गुड्डय जदपि ।
रघुवीर सपथ देखत दृगन हौं
इन्द्रजीत हितदपि ।।९०।।

।।घनाक्षरी।।

सज्जि गलगज्जि बोल्यौ लच्छमन बोल बोल्यौ

स पथ अडोल लषि मोहि कौन लचि है ।

देषत हीं देहौं इन्द्रजीत कौंठ हाय जाय

जौ पैसत संकर सहाय आय रचि है ।

भनै समाधान भैजहान संघरन जै

है कौन की सरन सठ कौन तेज तचि है ।

रामचंद्र की सौं करै कै यौ छल छंद

मति मंद आजु नंद दसकंध कौनबचि है ।।६१।।

पैजकरि क्रुद्ध चल्यौ रामानुज सुद्ध

सुनि जुद्ध कौय यान मघवान असकते हैं ।

फटकत फंद दिति नंद लटकत रविचंद

चटकत नम पंथ सठकते हैं ।

भनै समाधान हुडकैन महेसान कुड कैन

त्यौं कृसान जम सान फसकत है ।

धसकत धक्कन धराकौधारि नसकत

ससकत सेस कमठेस कसकत हैं ।। ६२ ।।

फनपति फन फुफकान सेफ टेसै जात

ऊंचे उचकै सैजात औचकै अमर है ।

षल षल मलत दयंत नद लत वीर लच्छन

चलत जब कौय को उघर है ।

सिंधु फूरि जात मघवान मूरि जात

हनुजात दूरिजात पूरिजात दिनकर है ।

कच्छ पकहलि जात दिग्गजद हलि जात

हलिजात महि मलि जात महिधर है ।।६३।।

मेघनाद जायकै निकुंभि ला अरंभजज्ञ
भंजवेनि मित लैकपिद्रं राय रामदूत ।
दंत की पेट सों लंगूर की लपेट सों
चरन्न की चपेट सौं चपेट कै चपेट तूत ।
जुंघ की भपेट सों षषोट की ससेट सौं
ससेटरच्छ पेट सौं रपेट मीडि कुंड मूत ।
जाग भंग औनको सुमौन कौ बनायराम भौन कौ
प्रदीप गज्ज पौन कौ सपूत पूत ।।६४।।

जज्ञ भंग देषिकै उठौ अभंग इन्द्रजीज
क्रुद्ध कै विरुद्ध कीस वृन्द मर्द मर्द धाय ।
मच्छियौ प्रतच्छ लच्छरिच्छ कौं समेटि
लच्छ रच्छ अच्छ कै विपच्छ नेकु न करीस हाय ।
उच्चरै समान धान मल्ल जुद्ध ठानि द्वैभिरै जुवान
भान के समान आसमान जाय ।
विंध्य सौं मदंध वंध गं वाहनंद लैक
पीनके प्रबंध दीन बंधु बंधु पास आय ।।६५।।

उडी धूरि धायौ पंक पारावार फूटि टूफि
हय षुर थार त्यौं पहार क्षारकन है ।
गज हल काकी हलकार अल कालौं पलकालौं महिमचल
नचत षल - गन है ।
सज्जि दल आयौ गल गज्जि इन्द्रजीत
अँड उमडत कमठक ठौर पीठ पन है ।
भैंभैं परै भूमि भार दिग्गज दतारै भारे
नैनै परैं फसकि फनीपति के फन है ।।६६।।

।।हरि छंद गीतिका ।।

इत मेघनाद निनाद सज गजसिंह नाद उमंड्यिं ।
अतिकाय सुंभ निकुंभ कुंभ महोदरादि मुंमड्यिं ।
सरसेन कंपन भुवन चंपन भट अकंपन मंड्यिं।
दलकोटि लच्छ सहस्त्र रच्छ बहूथ्थे जुथ्थ पंछड्यिं ।।९७।।

मद अंध विंधर विंध्य से चले ढकिलि सिंधु रसज्जिकै ।
जिन्ह कीरगज्जत रजसुर बाज तजत लज्जित लज्जिकै ।
तिमि घुमड घोर नकी घनी छवि छनी काहि मनी परै ।
निखिचर अनीवनि कै बनी रनकी मनीम गनी परै ।।९८।।

सज रथन की सुर पथनकी छविकथन की सरसंत है ।
हिय मौन हयदर प्रवल पैदर अति अभय दर संत है ।
उमडे उमंग अमंग दल चतुरंग जंगउ माह सो ।
सेनातयार सवार हैं सरदार सज्जि सनाहसो ।।९९।।

येक सिंह पैनरसिंह चढि इक महिष एक मतंग पै ।
एक गवैं पैये कनकुल पैये कसकुल पै सकुरंग पै ।
येक चक्र पैये कनक्र पैये कमक्र पै समुरैं पै ।
येक कर्म पैयेक सर्म पै पर अर्भ पैस तुरंग पै ।।१००।।

धौं साधरकारनभट हुंकारन परि पुकारन धरनि मे ।
उडि धूरि धुंधनि मूंदिरविदलकों सकों कि मिवरनिमै ।
उमडी बडी भट भीरतहं समडी भरामर सोरकी ।
घुमडी घनी घनकी घटा जनु छटा सिंधु हलोर की ।।१०१।।

इत वीर लच्छन पिल्यौ लच्छन कीस लच्छन गज्जियं ।
रनसील अंगद नील नल के सरी तर्ज्जनतर्जियं ।
बडे जामवंत दुरंत दल हनुमंत आदिक हुंकरे ।
गिरि विटप लै भट प्रलय दग्गिजनु फनी फन धर फुंकरे ।।१०२।।

समर दच्छ लच्छत पिल्यौ, उतरच्छ सवलवान ।
उदमट कौन यक पिनकौ मच्च्यौ घोर घमसान ।।१०३।।

।।छंद त्रिभंगी ।।

इत लछिमन वीर पिलिरन धीर कुप्प गही रंजुद्ध रच्यौ ।
उत दषमुष नंदन सुमट निलंदन उमडि अमंदन समर सच्यौ ।।
दुहुँ दल भटकौ षीर नर सरोपै चित चट चोपैड मगजरे ।
जनु प्रलय अरोपै जम मग लोपै वठिरन गोपै लरन लगे ।।१०४ ।।

भट मटकट धावें गिरिन्ह चलावैं अरिनमिलावैं धारनितलैं ।
षरन षरचटच्चट दंत षटष्षट परत फटफफट रजनि चलं ।
गहि कपिन षट षट मटकि घटच्घट पिवत गटग्गट रुधिर गलं ।
येकयेक्कन जुट्टहिं मुवमट लुट्टहिं कटितन टूट्टहिं समर थलं ।।१०५ ।।

येक दिष्षत वुहहिं वचमज चुट्टहिं रदरद फुट्टहिं दीनरटं ।
धरियेक्कन क्रुट्टहिं प्रान स छुट्टहिं जोग्गिनि घुट्टहिं श्रोन घटं ।।
येक वारिजन वमकै भलसे भमकैं घनसे घमकैं रपि रनमैं ।
तन जान अभंगन परिहि सुअंगन उमडि उमंगन भरि मनमैं ।।१०६।।

वाननि की सक्कि सकि आवनतकि तकि डरमै धकि धकि धरतनहीं ।
रन रौसन छकि छकि जानन फकि फकि धावत थकि थकि परतमही।
वह श्रोनित चक चक धावन मक मक मारन ठक्ठक रुपि रन मैं ।
घर लै तनतम कैं तेगन जमकैं दामिनि दमकैं जनु धन मै ।।१०७।।

वोलैं कपि हरि हरि वाहैं भरि भरि अत्रन करि करि गर्ज्जि अरैं ।
एकै नट लरि लरि सस्त्रन भरि भरि कटि सिर ढरि ढरि धरनि परै।
दै दै कर ढालैं साँग उछालैं वल भरि घालैं कोप सनै ।।
पग पछिलिन चालैं छत पन पालैं उरन उछालैं अरिन हनैं ।।१०८ ।।

जनु पावक लपटैं येक इमि झपटैं सुभट न चपटैं दावितरैं ।
एकनयेक झटकैं पट से पटकैं नभ मैं फटकैं अटकि मरैं ।।
येक हथ्थनि हथ्थह वथ्थनि वथ्थह मथ्थनि मथ्थह वीर लरैं ।
येक सैल्ह उठै लन षोट कषै लन षंजर पेलन पैलि परैं ।१०६।।

कटि हाउकरक्कत षग्ग षरक्कत गात गरक्कत वार करैं ।
टप कै नह रक्कत ठेलि ठरक्कत मुंड ठरक्कत भूमि झरैं ।।
तन जान तरक्कत थलनथ-रक्कत देह दरक्कत दिलन डरैं ।
समधान हरष्षत देव वरष्षत पुहुपझरष्षत जै उचरैं ।।११०।।

मरदान मरक्कत भयन भरक्कत वचित्त वरक्कत उमडि परैं ।
कठि संड फरक्कत जीव सरक्कत कुछन हरक्कत स्वर्ग धरैं ।।
करि दिव्य उमंगन मरि रसरंगज विपति अंगन वीर वरैं ।
जैजे सफ जंगनतो तरंगन कटि अंग अंगन भटनवरैं ।।१११।।

जहं सैल्ह धमंकन तीरतमंकन चपल चमंकन तेगन की ।
षारन षारझमंक नंदतदमंकन गिरि तरु ठंकन वेगन की ।
कटि कटि भट टुट्टहिं महिपर लुठ्ठहिं प्रान सुछुट्टहिं स्वर्ग चलैं ।
लषि इमि घमसानै देव विमानै चित्र समानै रहित हलैं ।।११२।।

दुहुं दल हठ धारी रनरचि भारी षगसुहारी भीर भरी ।
काली किलकारी देकर तारी संकर तारी उमचि परी ।
तेहि कौतुक देषन केलि विसेषन मोद अलेषन भाव भले ।
नंदी चढि नंदी नाष अनंदी गन जुत चंदी चाह चले ।।११३।।

भैरौ करतालन भूत वेतालन तहँ पट तालन जेवजगी ।
मिलि भूत पिसाचन लफिरन माचन जुग्गि निनाचन नचन लगी।
धरमाल नसीसन गुहि भट सीसन संभु असीसन देत फिरैं ।
रुधिरा भिष मीसन षप्पर षीसन भाय ष वीसन षगषि भिरैं॥११४।।

॥ दोहा ॥

देत असीस गिरिस तहं, पहिरि सीस मय माल ।
उडकारत चंडी फिरत, ववकारत वैताल ॥ ११५ ॥

॥ छंद अमृतध्वनि ॥

धनि धनि लच्छिन लच्छमन रच्छसु वन रन जुट्ट
कपि कौन व संग्राम हव देषत महि मट्ट लुट्ट ।
लुट्टत महि भट टुट्टत अंगतन छुट्टत एक हन
हथ्थ फटक्क समथ्थन पटकत मथ्थन ।
गटकत वथ्थन कर जन षग्गग्गहि
करषग्गहतमत सुअगग्चलत उमग्गा मरमन ।
दंड धुंति रन गुंडग्गिर तम सुंड ममकत
मुंड ध्वनि धनि ॥११६ ॥

घहरत लषिधन नाददल धन घुमडत जिमि पिच्छ
करि मच्छ नरच्छन कियौ रिच्छच्छय परति।
च्छरिच्छ छय परति छच्छ
तजि मिरच्छ छहरत ।
लच्छन सुमट सुलच्छन उमडित तच्छन
पौन विच्छन फहरत ।
जुद्धनु धरि कुद्धक्करि सुविरुधद्दल
अनुरुद्ध फफहरत ।
नटप्प्रभु उदमटम्भिरि उदघटक्किय
घन घंटग्घहरत ॥११७ ॥

।। छंद महाराच ।।

गरज्जि सिंहनाद लौं निनाद मैघनाथ वीर
कृद्ध मानसान सों कृसानु वान छंथियं ।
लषी अपार तेज धार लच्छन कुमार वारि वानसौं
अपार धार वर्षिज्वाल षंडियं ।
उडाय मैघमाल कौं उताल रच्छ पाल वाल
पौनवान अत्रघाल की सजालं दंडियं ।
भयौ न होत होयगो न ज्यौं अमान
इन्द्रजीत राम चंद्र वंधु सौं कराल जुद्ध मंडियं ।।११८।।

उडंतमर्कटावली विचाल मरुतावली सरावली
चलायरच्छ सावली सँधारियं ।
निसंक लंकनाथ नंद इन्द्र वन पूरि मूरि
अद्रि पूरि चूरि कै गरूर गाज डारियं ।
परं तवत्र देषि रामवंधु ब्रह्म अत्र मोष
रच्छ ओष अंड कोष चंड घोष धारियां ।
जरंत जातु धान जान राघवाधिपति अति
पारपति हित पासुपति अत्र पारियं ।।११९।।

घलंत रूद्रवान कोटि रूद्र कुप्यमान वैदिसान
मैदिसान मैंकृसानुधार लग्गियं ।
रमैसवंधु कृद्ध रमैसवान चौट घल्लकोटि
कालरुद्र मंगलीन कै उमग्गियं ।
महाप्रलै कराल काल ज्वाल जाल भौ कै
विलौकि भौ कवोक मै त्रिलोक लोक डग्गियं ।
विपच्छ पच्छ मच्छ मच्छ रच्छ कच्छ घच्छ
घच्छ रच्छ रच्छ नंद कौ सोवच्छ फौरजग्गियं।।१२०।।

करीर रच्छरीर वच्छ फोरवाहु तोर घोर घोर कै
मरोर भूपताल आसमान भो ।
जहान मैं अकंपमान कंपमान कंपमान
कैदिसान वैदिसान सुप्रकासमान भो ।
अखंड चंड मारतंड मंडलै उमंडि कै
उदंड ज्वाल माल मंड जात यौं प्रमान भो ।
अमानरामवान कौटि भानु को प्रमान कौटि
कल्पककृसानुता समान भासमान भो ।। १२१।।

मचीस सुलंक हाय हाय जौरज्वाल छाय छाय
रामवान धाय धाय रच्छ वर्ज मज्जियौ ।
उडाय कुम्भ मस्त को प्रहस्तकों निरस्त कै
समस्त जोर जस्त जेर जस्त कै विसज्जियौ ।
अंकपनादि वृंदमीसवीस वांहुं गर्भ पीस
कहि मेघनाद सीस पास आइ अज्जियौ ।
अजित वंधु रामको सुजीत इन्द्रजीत कौं
अजीत इन्द्रजीत जीन नाम पाय गज्जियौ।।१२२।।

महेन्द्र जीति मुंडकाटि रच्छमारि मुंड पाटि
लंक के कपाट फाटि डाटि जुथ्थयावली ।
सुंरात कैपछारि कै नरान्त कै संघारि कै
निकुंभ कुंभ मारिकै विडारि रच्छ सावली ।
भवंत मान जुद्ध जीति लछनलसंत गर्भ गर्भवंत
गंजिकै गजंत मर्क्कटावली ।।
वजंत व्योम दुन्दुमी जजंत पुष्पवृष्टि सौं-
म्प्रजंत दिव्य अस्तु तीसमस्त देवतावली ।।१२३।।

।। छंदकमला ।।

गथ्थन अकथ्थ समरथ्थ दसरथ्थ सुतहथ्थव
समथ्थ दसमथ्थ सुत मथ्थरन ।
सद्द घन नद्द हन नद्द अनहद्द वलसद्दल
विरद्द अनवद्द जसगद्द गन मद्दलन ।
नद्दन मरद्द नगरद्द कररद्द हरद्द दल वद्दल
मरुद्दलन धान समरच्छ जन ।
कच्छ जन अच्छ मनदच्छ जय लच्छमन लच्छ
जय लच्छमन ।। १२४ ।।

रच्छ प्रतपच्छकर रच्छ पति स्वच्छ तव लच्छ
जस अच्छ रिपु अच्छरन वच्छरन् ।
तच्छनविपच्छन विनच्छ य प्रतच्छय
स्वस्वच्छन मुषच्छन समच्छकर अच्छपन ।
धानसमरच्छ कपिरिच्छ दल रच्छक
अपच्छ कृतपच्छ षलमच्छ हन जच्छ गन ।
रच्छ कुल रच्छ उर रच्छन विपच्छ कृत कच्छ जुत
वच्छ जनरच्छ जय लच्छमन ।।१२५ ।।

।।छंद अमृत ध्वनि ।।

जय जय लच्छित लच्छमन लच्छन रच्छ सुषंड ।
जीत्यौ सरपति जीतकहैं मंडित प्रधनु प्रचंड ।
मंडित प्रधनु प्रचंडित प्रतिभट दंडित दुवन उदंडित प्रतिमय ।
दंडदुत भुज दंड छय बल वंडक्कर वल वंडकर छय ।
छंडत सरल विषंगडग्गजि गिरि चंडक्कुन पविहं उग्गरतय।
दंडित त्रिदस उदंडित प्रगट अषंड ध्वनि ब्रह्मं उज्जय जय ।।१२६।।

जय जय धुनि छावहि गगन, गावहिं मंगल गान ।
बरसावहिं सुर मुनि सुमन, वर पावहिं समधान ।।१२७।।

।। छप्पय ।।

जय जय सुर उच्चरहिं वृष्टि कुसुमावलि सज्जहिं ।
जामवंत हनुमंत अंगदादिक भटगज्जहिं ।
इन्द्रजीत कहं जीति चल्यौ सौमित्री हितकरि ।
कट्टि सीस दससीस नर कौई स अग्रधरि ।।
जुग जौरि पानि समधान कहं सीस आनि पद पंकजहँ ।
करि जस गहकिरन धीरवर मिल्यौ आनि रघुवीर कहं ।।१२८।।

जय लछिमन रनधीर वीर वीराधि वीरवर ।
जय उदंड भुजदंड चंड कौ दंड दंडधर ।
जय अमंद आनंद कंद षाल फंदनि कंदन ।
कृत वृन्दारक वृंदचरन अरविंदन वंदन ।
जय जय समथ्थदसरथ्थ सुत हथ्थ मथ्थ दसमथ्थ सुत ।
जन वानि जानि समधान सिर धरहु पानि वरदान जुत ।।१२९।।

।।दोहा ।।
लषानसतक कलि दुष हतक, कतक वषानैं कोइ ।
वीर श्री सिर्यराम पद अचल प्रीति दिढ होइ ।।१३०।।

इति श्री राम षंडल पथे शिवाशिवं संवादे लछिमन सतक समाधान कविकृत,
समाप्त ।
शुभमस्तु ।